ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

VOL. 4 NO. 6 SPECIAL ISSUE DECEMBER 2018 IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF)

2018-2019

Special Issue On

PROBLEMS AND CHALLENGES BEFORE THE WORKING WOMEN

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Associate Editor
Dr. Sunita Tengse

Assistant Editor
Dr. M. B. Patil

IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF) ISSN: 2454-5503

CHRONICLE

OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

VOL. 4 NO. 6 SPECIAL ISSUE DECEMBER 2018

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue On

PROBLEMS AND CHALLENGES BEFORE THE WORKING WOMEN

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Associate Editor
Dr. Sunita Tengse

Assistant Editor
Dr. M. B. Patil

Mahatma Gandhi Education and Welfare Society's
CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES, KALYAN (W)
www.mgsociety.in +91 8329000732 Email: chcskalyan@gmail.com

19. कामाच्या ठिकाणी होणाऱ्या महिलांचा लैंगिक छळ व
राजश्री पांचाळ 93

20. प्रसुतीपुर्व लिंगनिदन प्रतिबंधक कायदा 1994 |
डॉ. भारत भो. राठोड 97

21. नांदेड जिल्ह्यातील लिंग गुणोत्तराचा अभ्यास |
शंकर सटवाराव जाधव 100

22. ग्रामीण भागात नौकरी करणाऱ्या महिलांच्या समस्या |
ए. बी. वाळके 107

23. नौकरी करणाऱ्या महिलांच्या कौटुंबिक समस्या : एक अभ्यास |
माने उषा यशवंतराव 112

24. कामकाजी महिला व पुरूषसत्ताक मानसिकता |
डॉ. मोहन मिसाळ 117

25. महिलाओं की पारिवारिक समस्याएँ और मनोविज्ञान |
डॉ. पांडुरंग दुकळे 120

26. हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित कामकाजी नारी |
डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव 124

27. कामकाजी नारी समस्या- सुझाव |
डॉ.शारदा राऊत, अर्चना बदने 123

28. स्त्री चेतना और मानवाधिकार | **डॉ. वडचकर एस.ए.** 138

29. Legal Rights and Protection of Working Women
Dr. Ambadas Pandurang Barve 142

30. Dilemma of a Working Mother
Harsha Rana 147

31. Cyber Crime and the Working Women: A Critical Overview
Dr. Vasant D. Satpute 153

32. Problems Faced by Women in Workplace....
Varma Vishal Parashram & Varma Priya Parashram 157

33. Mee Too Movement and Working
Dr. Ahilya Bharatrao Barure 161

Sonpeth • Lal... Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani

28

स्त्री चेतना और मानवाधिकार

डॉ. वडचकर एस.ए.
हिन्दी विभाग
कै. रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ, जि. परभणी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

अबला नहीं कहा जा सकता, अब विश्व की नारी की,
राख समझना भूल बहुत है, छिपी हुई चिनगारी को //

एक युग था भारतीय नारी का सारा जीवन घर की चारदीवारी के भीतर बीतता था | वह अपना पुरा समय और शक्ति चुल्हे चौके का काम करने, बर्तन मांझ ाने, संतान का लालन-पालन करने में और गृहस्थी की देखभाल में बिताती थी | उसे गृह-लक्ष्मी, गृहणी कहकर उसके प्रति सम्मान भी प्रकट किया जाता था मध्यकाल के सामन्ती वातावरण में वह पुरूष की भोग्या, दासी मात्र बन कर रह गई | उसे पाँव की जुती समझकर उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाने लगा | परंतु आज बात कुछ बदल गयी है वह विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढने लगी, उच्च उपाधियाँ प्राप्त करने लगी, उसमें आत्मसम्मान, स्वावलंबन की भावना जगी, अपनी प्रतिभा का उपयोग करने की लालसा उत्पन्न हुई तो चारदीवारी की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन कर नौकरी करने के लिए निकल पड़ी |

नारी यह मूल विषय ही ऐसा है जो एक सार्वभौम और सार्वकालिक सामाजिक समस्या से सम्बध्द है | नारी समस्या समाज की वह जीवन्त समस्या है, जो परिवार-परिवेश, ग्राम-नगर सर्वत्र उपस्थित है | यह ऐसा जीवन्त ज्वलन्त प्रश्न हैं, जो प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को चिंतन करने के लिए विवश करता है | एक और उसे सृष्टी की सुन्दरतम वस्तु भी माना जाता है | उसका रूप ही उसकी श्रेष्ठता को सिध्द करने में पूर्ण समर्थ है फिर उसका आत्मगौरव, अकुष्टसेवा, त्याग कृती ही उसे महिमामयी बनाती है | उसकी मोहन छवि ने पुरूष चित्त को सदैव लुभाया है और उसकी सेवा त्याग वृत्ति ने अभिभूत किया है | भारतीय वाङ्मय में नारी - महिमा का गान हुआ ही है, भौतिकवादी सभ्यता का साहित्यकार भी उसके संग को प्रिय मानता है | गेटे का कथन है- "Society of women is foundation of good manners" लावेल की चिन्तनधारा गेटे से भी आगे है वे लिखते है - Earth's noblest thing is a women perfact."

देश को आजादी मिलने के पश्चात भारतीय संविधान ने महिलाओं के प्रति संवेदना दिखाते हुए, उन्हे पुरूषों के समान अधिकार प्रदान किये और आजाद देश

की सरकारों ने महिलाओं के हितों में समय - समय पर अनेक कानून बनाये, शिक्षा के प्रचार प्रसार को महत्व दिया गया और बच्चियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया इस प्रकार से जनजागरण के जरिये महिलाओं ने अपने हक को पाने के लिए पुरूषोंद्वारा किये जा रहे अन्याय के विरूध्द अनेक आन्दोलनों के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद की, और समाज में पुरूषों के समान अधिकारों की मांग की, देश में महिला के हितों के लिए महिला आयोग का गठन किया गया, जो महिलाओं क़े प्रति होनेवाले अन्याय के लिये संघर्ष करती है | २०१२ में प्राप्त आंकडों के अनुसार कामकाजी महिलाओं की भागीदारी कात्र २७% थी | अर्थात कहने का मतलब यह है की इतना सब कुछ होने के बाद भी, आज भी महिलाओं की स्थिती में बहुतकुछ सुधार की आवश्यकता है | अभी तो अधिक तर महिलाओं को यह आभास भी नहीं है की वे शोषण का शिकार हो रही है और स्वयं एक अन्य महिला का शोषण करने में पुरूष समाज को सहयोग कर रही है |

किसी भी समाज की उन्नति जानने के लिए उस समाज की नारी की स्थिती को जानना सबसे अहेम बात है | वैदिक काल से लेकर आजतक हम नारी को लेकर जब विचार करते है तो लगता है की धीरे - धीरे नारी भोगवस्तु बनकर रह गई, जो समाज में भविष्य के लिए घातक है | समाज के सारे प्रतिबन्ध नारी पर है पुरूष के लिए किसी भी प्रकार की मर्यादा तय नही की गई है | पति चाहे कुमार्गी, दुराचारी, अत्याचारी ही क्यों न हों स्त्री को उसे मान्यता देनी होग़ी | समाज ने सभी जिम्मेदारीयाँ स्त्रियों के सिर पर पटक दी है | उपर से परिवार और समाज में अपना सम्मान पाने के लिए आर्थिक रूप से निर्भर होने की सलाह दी जाती है हम जरूर कहते है की नारियों में बदलाव हो चुका है, किंतु सच बात यह है की उच्च शिक्षित परिवारों की महिलाओं की बात अलग है | मजदूर वर्ग में शिक्षा के अभाव में रूढीवादी समाज के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हूए भी अपमानित होती रहती है, आज विशेष बदलाव नहीं हो पाया है | महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने से मध्य परिवार की महिलाएं भी पुरूषों के समान कार्यों को अंजाम देने लगी है | डॉक्टर, वकील, पोलिस जैसे अनेकोक्षेत्रों में महिलाओं की बहुत मांग है | परन्तु हमारे समाज का ढांचा कुछ अलग है | महिला को कामकाजी होने के बाद भी नए प्रकार के संघर्ष से झूझना पड़ता है, उन्हे अपने कामकाज के साथ घर की जिम्मेदारी भी ठिक ढंगसे उठानी पड़ती है | उसके लिए उन्हें सवेरे जल्दी उठकर अपने परिवार के भोजन से लेकर सभी प्रकार की व्यवस्था करनी पडती है | दफ्तर से संध्या समय लौटने के बाद गृह कार्यों में लगना होता है | घर में सम्मान पाने घरेलू हिंसा से बचने एवं परिजनों के अपमान से बचने के लिए जब एक महिला आत्मनिर्भर होने के लिए घर से बाहर निकलती है, तो उसे समाज और पुरूष सत्तात्मक सोच रखनेवालों से सामना करना पड़ता है, अनेकों टीका टिप्पणीयों, तानाकशी, घुरती निगाहों से सामना

Late ... Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

करना पड़ता है | उदंड व्यक्तियों के छेडखानियों से बचने के लिए उपक्रम करने होते है, कभी - कभी तो बलात्कार और पतिरोध का सामना करते वक्त हत्या का शिकार भी होना पड़ता है | अपने कार्य स्थल पर अपने ही बॉस या सहयोगियों से दुर्भावनाओं का शिकार होना पड़ता है | संध्या समय अपने कार्यस्थल से लौटते समय अनेक प्रकार की आशंकाओं अनहोनी घटनाओं का शिकार भी मन में व्याप्त असुरक्षा की भावना, जीवन को कष्ट दायक बनाते है | वेतन के मामले में भी महिलाओं का शिकार होता है जैसे - अंग्रेजी स्कुलों का वेतन | कम्पनियों, कारखानों का वेतन कोई सकारात्मक पहल की उम्मीद नहीं होती, अनेक बार तो वह अनेक दुर्व्यव्यवहार का शिकार हो जाती है | आज भी पुरूष प्रधान समाज की सोच में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को नहीं मिलता साथ ही हमारी लाचार न्याय व्यवस्था के कारण यदि कोई महिला सरेआम किसी अत्याचार का शिकार होती है तो समाज के लोग उसका बचाव करने से भी डरते है | स्त्रियों के सारे अधिकार सुरक्षा के नाम पर छीन लिए गए स्वतन्त्रता नाम मात्र की रह गई | स्त्री के जीवन का दायरा घरकी चारदिवारी तक सीमित रहा |

वर्तमान समाज में नारी की समतुल्यता को लेकर बुलन्द नारे चलते है | किंतु व्यावहारिक रूप से आज भी पाषाण युग की स्त्री की भाँति नारी परतंत्र है | "यत्र नार्थस्तु पूजंते रमन्ते तत्र देवता" कह कर प्राचीन काल में नारी की पूजा में देवता की उपस्थिती समझी जाती थी | लेकीन ऐसी नारी की भावनाओं को दमित करके समाज अब संतोषपाता है | फिर भी सभी काल के साहित्य चाहे सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक किसी भी कोटि का हो या किसी भी विधा का हो उसमें नारी जाति के मानसिक संवेगों, आन्तरिक अनुभूतियों, अतृप्त वासनाओं दिवास्वप्नों और असामान्य व्यवहारों का सम्यक चित्र उपस्थित करता है | उषा महाजन की कहानी पुल की नायिका पुरूष समाज को चेतावनी देती हुई कहती है आपके लिए मैं महज एक साधन हूँ ? सोमेश तक पहुँचने के लिए एक पुल | नारी के बदलते रूप के कारण वह अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर निर्णय लेने लगी है | नारी की मानवी रूप में प्रतिष्ठा ही समाज के भविष्य को उज्ज्वल बना सकती हैं | इस सम्बध में मृणाल पाण्डे लिखती हैं ङ स्त्री के अस्तित्व को, उसके पुरूष से जुड़े सम्बन्धों तक ही सीमित करके न देखा जाये, बल्कि पुरूष की ही तरह उसे भी मानवता का एक भिन्न तथा अनिवार्य और पूरक तत्व माना जाए | स्वतन्त्रता पुरूष के समान स्त्री का भी अधिकार है | पुरूष अपने आप में स्वतन्त्र है, परन्तु स्त्री की स्थिती ऐसे नहीं है | वह स्वतन्त्र होकर कहीं जाती, तो उसे समाज दुश्चरिणी घोषित करता है | चित्रा मुद्रगल की कहानी राणी माँ का चबूतरा की नायिका गुलाबी जीने के लिए बच्चों के पालन के लिए तनतोड़ मेहनत करती स्वावलंबी स्त्री है | रात के समय जब वह काम पर जाती है तो लोग उसे गलत नजर से देखते है | यही हमारे समाज की स्थिती है |

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

गुलाबी के समान स्वावलंबी होकर जीना स्त्री का अधिकार है, पर स्त्री इससे भी वंचित है | प्रगति की इस दौड़ में जहाँ नारी आगे बढ़ रही है | वहाँ पुरूष समाज की किसी भी चुनौती से डरने वालीभी नहीं है | स्त्री - पुरूष सम्बन्ध में स्त्री, पुरूष की सहकर्मी बनाना चाहती है और अपनी गरिमा से जीवनपथपर आगे बढ़कर गौरव अर्जित करना चाहती है | इसके बारे में श्याम चरण दुबे ने कहा है | " नारी स्वतन्त्र व्यक्तित्व या स्वतन्त्र इकाई के लिए अपना आक्रोश व्यक्त करना चाहती है | इस नारी स्वतन्त्र व्यक्तित्व में डॉ. प्रभा खेतान कहती. " स्त्री न स्वयं गुलाम रहना चाहती है, नही पुरूष को गुलाम बनाना चाहती है | स्त्री चाहती है - मानवीय अधिकार | स्त्री दृष्टि एक मानवीय दृष्टि है जो स्त्री - पुरूष भेद को मिटाकर दोनों में प्रतिष्ठा की समानता लाने की बात करती है |

निष्कर्षत :- कहा जा सकता है कि स्त्री चेतना और मानव अधिकार की जोरदार अभिव्यक्ति से ही समाज में मानव अधिकारों के हनन के प्रति नारी को जागृत किया सकता है |

संदर्भ

१) आशा रानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा, दिशा
२) पुष्पावली खेतान - नारी अभिव्यक्ति और विवेक
३) डॉ. प्रभा खेतान - हंस - दिसम्बर १९९६
४) डॉ. मुदिता चन्द्रा - आधुनिक एवं हिन्दी कथा - साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप
५) श्यामाचरण दुबे - परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति
६) मृणाल पाण्डे - स्त्री, देह की राजनीति से देश की राजनीति तक :
७) मैत्रेयी पुष्पा - चाक
८) मधुमती - जून २०१७
९) प्रेमीला के. पी. - स्त्री अध्ययन की बुनियाद

❑❑❑

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani